महाविद्यालय का संक्षिप्त परिचय

चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय की स्थापना सन् 1950 ई० में हुई थी। यह महाविद्यालय संस्थापक चौधरी महादेव प्रसाद जी के नाम पर है। यह महाविद्यालय इलाहाबाद विश्वविद्यालय का एक संघटक महाविद्यालय है जिसमें प्रत्येक धर्म, सम्प्रदाय और जाति के विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जाता है। यह महाविद्यालय जार्ज टाऊन में महात्मा गाँधी मार्ग पर स्थित है। महाविद्यालय में कला, वाणिज्य, विज्ञान तथा विधि-संकाय है, जिसमें बड़ी संख्या में विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। इसमें विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए आधुनिकतम उपकरणों से युक्त प्रयोगशालायें हैं। महाविद्यालय में एक विशाल पुस्तकालय एवं वाचनालय है, जिसमें विविध विषयों की पुस्तकें पर्याप्त संख्या में उपलब्ध हैं। वाचनालय में हिन्दी और अंग्रेजी की साप्ताहिक, मासिक और वार्षिक पत्र-पत्रिकाओं के अतिरिक्त विविध दैनिक समाचार पत्र उपलब्ध रहते हैं। विद्यार्थियों के मनोरंजन एवं शारीरिक विकास के लिए महाविद्यालय परिसर में एक छात्र -सदन, व्यायामशाला तथा एक विशाल क्रीड़ा स्थल है। छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना, राष्ट्रीय कैडेट कोर तथा अन्य बौद्धिक एवं सांस्कृतिक क्रिया कलापों का संचालन भी होता है।

संगोष्ठी हेतु रजिस्ट्रेशन-

राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रतिभाग करने के लिए कॉलेज के हिंदी विभाग में ऑफलाइन या गूगल फार्म पर ऑनलाइन पंजीकरण करना आवश्यक है। पंजीकरण शुल्क कॉलेज के हिंदी विभाग में नगद अथवा NEFT/UPI/ ऑनलाइन माध्यम से जमा किया जाना चाहिए।

पंजीकरण शुल्क

प्रतिभागी शिक्षक- 1200/-,शोधार्थी (शोधछात्र वृत्ति पाने वाले)-1000/-

सामान्य शोध छात्र- 500/-, विद्यार्थी (स्नातक/परास्नातक)-200/-

ऑनलाइन पंजीकरण हेतु बैंक विवरण

Account Name: CMP SPECIAL GRANT ACCOUNT
Account Number: 86161010001460
Bank Name: CANARA BANK
Branch: PRAYAG BRANCH, PRAYAGRAJ
IFSC: CNRB0018616

प्रधान संरक्षक

प्रो. संगीता श्रीवास्तव
कुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

संरक्षक

डॉ. सुशील कुमार सिन्हा
अध्यक्ष, कायस्थ पाठशाला न्यास
प्रो. पंकज कुमार
अधिष्ठाता, महाविद्यालय विकास परिषद

अध्यक्ष

प्रो. अजय प्रकाश खरे (प्राचार्य)

परामर्श मण्डल

प्रो राजेंद्र कुमार, प्रो. राम किशोर शर्मा
श्री हरिश्चंद्र पाण्डेय , प्रो. अजय जेटली,प्रो. प्रणय कृष्ण ,
प्रो. संतोष भदौरिया, प्रो चन्दा देवी, प्रो. रामपाल गंगवार ,
श्री प्रवीण शेखर , श्री देवेंद्र प्रताप सिंह

संयोजक

डॉ दीनानाथ

आयोजन सचिव

डॉ सरोज सिंह
डॉ आभा त्रिपाठी

सह-संयोजक

डॉ. प्रेम शंकर सिंह

आयोजन समिति

डॉ भूपेंद्र कुमार, डॉ राजेंद्र कुमार श्रीवास्तव,
डॉ नीता सिन्हा, डॉ अर्चना श्रीवास्तव , डॉ. मंजू श्रीवास्तव
डॉ. सत्यंवदा सिंह , डॉ एस.पी. सिंह, डॉ आभा सिंह,
डॉ भूपेश त्रिपाठी, डॉ. संगीता, डॉ. अर्चना त्रिपाठी,
डॉ भावना चौहान, डॉ रंजीत सिंह, डॉ भारती कोरी,
डॉ. जी. गनेशन मिश्रा, डॉ . राजेंद्र यादव, डॉ. रमाशंकर
सिंह, डॉ. पूजा गौड, डॉ. रामानुज यादव, डॉ. प्रियंका गोंड

हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयागराज और सी.एम.पी. कॉलेज, प्रयागराज

के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भाषा, साहित्य, कला और संस्कृति
शिक्षण के नए आयाम : संदर्भ
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

27-29 फरवरी, 2024

आयोजक

हिन्दी विभाग
सी.एम.पी. कॉलेज, प्रयागराज

संगोष्ठी के बारे में-

भाषा किसी भी संस्कृति को अभिव्यक्त करने का सबसे सगुण रूप है और कलात्मक निष्पत्तियाँ इस सगुणता को रूपाकार देने का सबसे प्रमुख माध्यम। ध्यातव्य है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भाषा, कला और साहित्य के प्रश्न को समेकित तरीके से संबोधित करती है और उनके बीच एक तरल सबंध को विकसित करने की बात को प्रमुखता से सामने लाती है। भारत की बहुभाषिकता, सांस्कृतिक बहुलता और कलात्मक विरासत को सहेजने, सँवारने और आगे बढ़ाने के उद्देश्य से यह संगोष्ठी आयोजित की जा रही है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संदर्भ से देखें तो अनवरत शिक्षा, सतत मूल्यांकन, कला, भाषा साहित्य शिक्षण में समेकितता, मातृभाषा में शिक्षण, त्रिभाषा फार्मूला, कौशल एवं उद्यमिता आदि ऐसे कारक हैं जो आज उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक चुनौती की तरह हैं। साहित्य, कलाओं और भाषा के मामले में यह चुनौती और बढ़ जाती है। ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों के साथ क्षेत्रीय भाषाओं और हिन्दी का रिश्ता भी बेहद जटिलता का हो चुका है। कला, साहित्य और संस्कृति शिक्षण के लिए ओपन लर्निंग आधारित परिवेश का विस्तार किया गया है। **शांति निकेतन जैसी संस्थाएं जो कला एवं साहित्य शिक्षण की समेकित अवधारणा को स्थापित करने के उद्देश्य से बनाई गयी थीं, प्रायः उस लक्ष्य से बहुत दूर जा चुकी हैं। गांधी और टैगोर जैसे चिंतकों के शिक्षा संबंधी चिंतन के केंद्र में कला, भाषा, साहित्य और संस्कृति का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। कला एवं साहित्य शिक्षण के मंतव्यों एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मानकों को पूरा करने की दिशा में प्रयासरत एवं कृत संकल्पित होने के लिए इन दर्शनिकों की चिंताओं के साथ खड़ा होना भर पर्याप्त नहीं है बल्कि नए राष्ट्रनिर्माण के प्रयत्न के प्रति आने वाली पीढ़ी को तैयार कर देना भी शिक्षा नीति का प्रमुख लक्ष्य है।**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रमुख तत्त्वों में मूल्य शिक्षण एवं मूल्य संवर्धन को अनिवार्यतः शामिल किया गया है। निम्नतर की उत्तरजीविता वह महान लक्ष्य है जिसे हासिल करना शिक्षा नीति के लिए आदर्श स्थिति हो सकती है। । **'श्रम, प्रेम एवं शिक्षा'** वह त्रिक है जो आँखिन देखी ज्ञान' (अनुभव आधारित ज्ञान) से आवृत्त है। सामुदायिक सहयोग और श्रम के महत्त्व को शिक्षा से जोड़ते हुए भारत की निम्नतर एवं हाशिये की जनता को आत्मविश्वास, कौशलपरक एवं मूल्य परक बनाने की दिशा में आने वाले सांस्कृतिक संकटों की पहचान और उससे निजात पाने के तरीकों की खोज भी संगोष्ठी के उद्देश्य में शामिल है।

कोविड पश्चात की स्थितियों में जहां पर्यावरण संकट स्थितियों की ओर अकादमिक जगत का ध्यान गया है वही यह भी महसूस किया गया है कि कक्षा- शिक्षण के वैकल्पिक रास्तों की भी खोज की जाए। मानविकी खासकर साहित्य, संगीत, कला शिक्षण के लिए प्रकृति की समीपता, प्रकृति के साथ सामंजस्य को अनिवार्य माना गया है। आज जबकि प्रकृति और पर्यावरण से व्यापक समुदाय एक कटाव महसूस कर रहा है तो यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या कलात्मक शिक्षण के जरिए प्रकृति और मानवीय समाज के बीच अंतराल को किसी हद तक कम किया जा सकता है कि नहीं? क्या प्रकृति को रंगमंच की संकल्पना में बदला जा सकता है? स्वाभाविक रंग, प्रकाश और ध्वनियों के जरिए साहित्य-कला शिक्षण की चुनौती को स्वीकार किया जा सकता है और इस प्रयत्न में तकनीक की क्या भूमिका हो सकती है? आज जब राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू किया जा रहा है तब कला, साहित्य एवं संस्कृति शिक्षण के क्षेत्र में हो रहे अभिनव प्रयोगों को समक्षीकृत करने, उनके बीच परस्पर संवाद की श्रृंखला शुरू करने के महती उद्देश्य से यह संगोष्ठी करना चाहते हैं।

संगोष्ठी हेतु उपविषय-

- प्रकृति, कृषि एवं संस्कृति
- प्रकृति, पर्यावरण और कलाएं
- कलाओं की समेकितता की अवधारणा: कितना मिथ कितनी हकीकत
- रवीन्द्र नाथ टैगोर एवं अन्य चिंतको का शिक्षा दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति
- कलाएं: शिक्षण माध्यम के रूप में
- भाषा और कला शिक्षण में तकनीक की भूमिका
- कला और संस्कृति के बदलते आयाम : आधुनिक परिप्रेक्ष्य
- पर्यावरण संकट, साहित्य और समाज

टिप्पणी: अपने शोध प्रपत्र/शोध का सार दिनांक 20.02.2024 तक कृपया cmphindi1@gmail.com पर भेज दें।

संपर्क9415616083/8318087050/9451059820/735531828/9838809488/9415703379/8585961219/9013926864/7557612937/9451011234/9560827524/9140740028/934030

रजिस्ट्रेशन फार्म

नाम _____

_____-

पता _____

_____

_____

_____

अध्यापक/ अध्येतावृत्ति प्राप्त शोध छात्र/ शोधछात्र/ स्नातक/परास्नातक

_____

मोबाइल न. _____

ई मेल _____

रजिस्ट्रेशन शुल्क का विवरण-

_____

शोध पत्र का शीर्षक

_____

_____

हस्ताक्षर